Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मनोविश्लेषणवाद और आधुनिक समाज

ऋतू धूरिया* डॉ. संध्या बिसेन**

* शोधार्थी (हिंदी) सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (हिंदी) सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – समाज और परिवार की प्राथमिक इकाई के रूप में व्यक्ति और उसकी मन किसी न किसी तरह से पूरे समाज को प्रभावित करता है। मनोविश्लेषण बाद में यही व्यक्ति के मन का ही विश्लेषण कर इसके विचार भावनाएं आदि को जानकर है हम समाज और व्यक्ति के मन अध्ययन कर समाज को एक उचित दिशा देने का प्रयास करते हैं। मनोविश्लेषणवाद मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जो 20वीं शताब्दी के उत्तारार्ध में हमारी जानकारी में आई। जिस प्रकार जिस प्रकार मनोविज्ञान 'मानव व्यवहार का अध्ययन करता है ,उसी प्रकार मनोविश्लेषणवाद मन का विश्लेषण कर मन के गर्भ में छुपी हुई मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है।' 20वीं शताब्दी में मनोविश्लेषणवाद अपने प्रारंभिक रूप में केवल मां की व्याख्या तक ही सीमित रहा परंतु धीरे–धीरे आधुनिक समाज में यह है बहुत अधिक प्रचलित हो रहा है यह है साहित्य के क्षेत्र में एक नई क्रांति को लाया है जिससे रचनाकारों समाज ने अपने पात्रों/व्यक्तियों के मानसिक शारीरिक क्रियाकलापों के बीच मन में छुपे हुए भावों को उत्तरदाई पाया है।

शब्द कुंजी – मनोविश्लेषणवाद व मनोविज्ञान का संबंध, मनोविश्लेषणवाद और समाज के बीच संबंध,मनोविश्लेषणवाद का समाज पर प्रभाव , व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण चरण।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तावित अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत प्रस्तुत हैं:

1. समाज में मानव व्यवहार और मनोविश्लेषणवाद के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
2. मनोविज्ञान वी मनोविश्लेषणवाद के परिपेक्ष में मानव मन की व्याख्या प्रस्तुत करना।
3. प्रस्तुत अध्ययन में समाज में स्थित व्यक्तियों की बना स्थितियों से अवगत कराना जो की
4. आधुनिक समाज में मानवीय व्यवहार के मूल कारण है।
5. व्यक्ति की सोच व उसके कार्य के पीछे मूल कर्म को जानने में सहायता करना।

उपकल्पना – प्रस्तावित शोध के विषय में यह परिकल्पना ली गई है,कि समाज में व्यक्तियों की मूल स्थिति और उनके द्धारा किए गए, अच्छे बुरे कार्यों के पीछे उसके व्यवहार के मूल कारणों की तह में जाकर निष्कर्ष निकालना।

शोध प्रविधि – प्रस्तावित शोध पत्र की अध्ययन विधि मुख्य रूप से विश्लेषण आत्मक व विवेचनात्मक है, जो सरकारी और गैर सरकारी स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्र, इंटरनेट आदि का आश्रय लिया गया है।

मानव की गतिविधियों और स्वभाव का निर्धारण करने वाला वैज्ञानिक आधार पर निर्मित वाद है– मनो विश्लेषणवाद। यह मानव की मानविकीय और कृत्तयों का आधार को लेकर व्याख्या करता है। यह मानव के मन की आंतरिक प्रतिक्रियाओं के अध्ययन करने वाली आधुनिक अध्ययन पद्धति है।

आज के आधुनिक समाज, विचारधारा और जीवन के प्रति दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों को सबसे अधिक प्रभावित मनोविश्लेषणवाद ने किया है।

समाज और मनोविश्लेषण के बीच बहुत गहरा संबंध है। इस तरह हम समाज की सोच तथा सामाजिक पैठ को जान पाएंगे। सामाजिक पैठ – मतलब समाज की गहरी ऐसी सोच जो समाज के लगभग सभी परिवारों को किसी न किसी तरह से प्रभावित करतीहै।

समाज की इकाई परिवार और परिवार की प्राथमिक इकाई व्यक्ति है। व्यक्ति का मन किसी न किसी तरह से पूरे समाज को प्रभावित करता है। मन का विश्लेषण करना मनोविश्लेषण कहलाता है।

मनोविश्लेषण अर्थात मन को एक–एक विषय से अलग–अलग तार तार कर इसके विचारों ,कारणों तथा इसके होने वाले प्रभावों को जानना। इसके अंतर्गत मन की गहरी वैचारिक प्रणाली का अध्ययन किया जाता है, जो व्यक्ति को समझने में मदद करता है। यह बताता है कि व्यक्ति के अवचेतन विचार भावनाएं और प्रेरणाय समाज में उसके व्यवहार को किस तरह से प्रभावित करती हैं।

मनोविश्लेषण और समाज के बीच संबंध

अवचेतन मन का प्रभाव : फ्राइड के अनुसार हमारे मन का बड़ा हिस्सा अवचेतन मन से आता है जो कहीं ना कहीं हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है इसके ही प्रभाव से संस्कृति दूषित या परिष्कृत होकर निकलती है। मानवीय व्यवहार और सामाजिक संरचना दोनों ही अवचेतन मन की दमित इच्छाएं और संघर्षो को प्रभावित करती हैं।

सामाजिक संरचना : सामाजिक संरचना जैसे परिवार शिक्षा कानून एक व्यक्ति के अवचेतन मन को आकार देने में अपनी महत्व भूमिका निभाता है, प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा आसपास का वातावरण तथा उसकी पारिवारिक लालन पालन तथा पोषण आदि। इस पथ पर निर्भर करता है कि वह अवचेतन

मन के किस प्रकार की भावनाओं को जगह दे रहा है, व किस प्रकार की सूचनाओं को एकत्रित कर रहा है।

सामाजिक संरचना और व्यवस्थाएं जैसे परिवार शिक्षा और कानूनी प्रणाली व्यक्ति में तरह-तरह की इच्छाओं के बीजों को आरोपित कर देते हैं, जो उपयुक्त वातावरण को पाकर पुष्पित और पल्लवित होने लगती है। परिवार, स्कूल,कॉलेज में मिलने वाला सम्मान, अपमान, परितोष आदि के बीज यहीं से रोपित किए जाते हैं । पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक वातावरण इसमें अपनी सशक्त भूमिका को निभाते हैं। सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मानदंड व्यक्ति और व्यक्तिगत व्यवहार के विकास को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए फ्रायड ने भी लिखा है की 'दमनकारी समाज चिंता पैदा करते हैं'।

सामाजिक संघर्ष : मनोविश्लेषण सामाजिक संघर्ष को समझने में मदद करता है क्योंकि वह व्यक्ति और व्यक्तियों के मन में उत्पन्न होने वाली विचार भावनाओं को जानने का प्रयास करता है,जो कि समाज में रहकर एक प्रकार के संघर्ष को उत्पन्न करते हैं। सामाजिक संघर्ष से हमारा अभिप्राय यह है- वर्ग या क्लास संघर्ष,लिंग संघर्ष आदि। मनोविश्लेषण और समाज के बीच का संबंध में कई दृष्टिकोणों है। कुछ लोगों का मानना है कि मनोविश्लेषण व्यक्ति का संघर्षों को समझने का एक प्रभावी तरीका है, जबकि अन्य लोगों का मानना है कि मनोविश्लेषण सामाजिक संरचनाओं को समझने का एक उपकरण हो सकता है। मनोविश्लेषण का प्रभाव जिसमें साहित्य,कला संस्कृति आदि भी शामिल है। समाज का विश्लेषण करने के लिए मनोविश्लेषण का सिद्धांतों का उपयोग किया करता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक तौर पर संबंधों को उजागर करता है।

मनोविश्लेषण ने सामाजिक मान्यताओं और मूल्यों के बारे में हमारी समझ को प्रभावित किया है।

फ्राइड के मनोविश्लेषण के काम से यह पता चलता है कि हमारे व्यवहार को अवचेतन मन की भावनाओं ने कैसे प्रभावित किया हैं। भारतीय सामाजिक मानदंड को एक आदर्श माना जाता है, पर आधुनिक परिवेश में इसकी कल्पना संभव सी लगती है। बाजारवाद, उपभोक्तावाद विदेशी संस्कृति,इंटरनेट के नकारात्मक प्रभाव जिसमें मोबाइल,नशा कामचोरी आदि महत्वपूर्ण अपनी उपस्थिति को दर्ज करते हैं।

मनोविश्लेषण ने हमारे सामाजिक जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन लाया है।

हमारे विचारों को किस प्रकार से प्रभावित किया जा रहा है। इसका अंदाजा विश्लेषण के माध्यम से धीरे-धीरे हमारे समझ आ रहा है। इंटरनेट का गलत उपयोग के कारण बनती रील्स, चित्रपट या फोटोस वेबसाइट, स्कूल, बाजार, दुकानों में आसानी से उपलब्ध हो जाने वाले नशा की अधिकता कामचोरी आराम पसंद जिंदगी, इन सब का नतीजा आज का बेरोजगार नशेड़ी बिगड़े युवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग जो इसका शिकार हो रहा है ।

मनोविश्लेषण ने सामाजिक आंदोलन और राजनीतिक विचारों को प्रभावित किया है।

सामाजिक आंदोलन से हमारा अभिप्राय वह विचार जो समाज को प्रभावित करें- जैसे शादी की उम्र में वृद्धि के बाद पति-पत्नी के मनोभावों का ना मिलना और बहुत सारी समस्याओं को जन्म देने का कारण बनता है। जहां तक राजनीतिक विचारों की बात है आराम पसंद जिंदगी के चलते कई राजनीतिक पार्टीयां अपनी योजनाओं को बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखती है कि हमारी पार्टी को इस मानसिकता से अधिक से अधिक किस प्रकार से लाभ पहुंच सके। मार्क्सवाद का वर्ग संघर्ष, अमीर दिखने की चाहत,अपनी यथार्थता को पीछे छोड़ते हुए बहुत आगे की ओर निकल आई है ।ई.एम.आई तथा बाजार से कर्ज उठाकर अपना काम चलाना आदि इस बात को दिखाते हैं कि अब लोग अपनी आराम पसंद जिंदगी को चलाने के लिए किस-किस प्रकार की योजनाओं का उपयोग करते हैं।

मनोविश्लेषण पर समाज के कुछ प्रभाव निम्नलिखित है :

कला साहित्य मनोविश्लेषणवाद में कला साहित्य पर भी प्रभाव डाला है जिस कलाकारों और लेखकों ने मानव मन गहराइयों को अपनी रचनाओं में दर्शना शुरू कर दिया है, इस कारण प्रयोगवाद तथा प्रगतिवाद की कविताएं हमारे समक्ष आई हैं। जैसे

तन की मालीनता दूर करने के लिए प्रतिपल
पाप छाया दूर करने के लिए,
दिन रात स्वच्छ करने
ब्रह्मराक्षस घिस रहा है देह,
हाथ के पंजे बराबर
बांह -छाती,मुंह छपा- छप
खूब करते साफ
फिर भी मैल...
फिर भी मैल.....॥

: मुक्तिबोध (कविता -ब्रह्मराक्षस)

सामाजिक संस्कृति को प्रभावित किया है, प्राइवेट काम या नौकरी करने वालों ने अपना एक विशेष समाज बना लिया है। साथ-साथ इन्होंने अपनी एक विशेष संस्कृति को भी जन्म दिया है, जो काम के साथ-साथ सामाजिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाल रही है। अपनी सुविधा के अनुसार नियमों को बनाना पुराने नियमों का उल्लंघन करना, स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता तथा मन के मुताबिक खाना पीना, त्योहार मनाना आदि। भारतीय संस्कृति में त्योहार मान्यताओं तथा खानपान के पीछेके पीछे जो वैज्ञानिक नियम दिए गए थे, उनका तो आज धड़ले से उल्लंघन किया जा रहा है जिसका प्रभाव हमें सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

मनोविश्लेषण समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक मापदंडों की प्रतिक्रिया है जो संघर्षों और सामाज विरोधी तत्वों का पता लगाने में मदद करता है जो आधुनिक समाज में पनप रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन जिसका पता हमें मनोविश्लेषण के माध्यम से चल रहा है वह विचारों में बदलाव के साथ ही समाज के उत्थान या पतन का कारण बन रहे हैं सकारात्मक परिवर्तनों को अपनाकर हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

मनोविश्लेषण और समाज के बीच संबंध जटिल और प्रगतिशील है। मनोविश्लेषण समाज को प्रभावित करता है और समाज मनोविश्लेषण के अध्ययन को यह एक ऐसा संबंध है जो निरंतर गतिशील भाव से परिवर्तित हो रहा है जैसे परिवार, शिक्षा, परिवेश,पालन पोषण, पर्यटन,मान्यताएं आदि।

सामाजिक संबंध मनोविश्लेषणवाद सामाजिक संबंधों को समझने में मदद करता है यह मानसिक उलझन, परेशानियां, तनाव आदि के कारणों को उजागर करता है,जिसके समाधान से हमारे संबंध दुरुस्त होते हैं। संघर्ष के कारणों का पता लगाने के कारण समाज विरोधी तत्वों का पता लगाने में

भी इनमें मदद मिलती है, जो समाज के व्यक्तियों के बीच मतभेद वैमनस्यता आदि पैदा करते हैं।

सामाजिक परिवर्तन मनोविश्लेषणवाद सामाजिक परिवर्तनों के कर्म का पता लगाने में मदद करते हैं समाज में आए नितनएं परिवर्तन जैसे शिक्षा के अन्य विकल्प ऑनलाइन एजुकेशन डिस्टेंस एजुकेशन प्राइवेट डिग्री कोर्स स्किल डेवलपमेंट कोर्स रोजगार विकल्प करियर काउंसलिंग स्पोर्ट इंडस्ट्रीज आदि को मध्य नजर रखते हुए सामाजिक परिवर्तन आम बात है।

लिंग और यौनता मनोविश्लेषणवाद में लिंग और यौनता के बारे में सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है स्कूलों,कॉलेजों में यौन शिक्षा इस पर आयोजित परिचर्चाएं, इस बात को खुलकर सामने रखने आदि विषयों को लेकर बात करना अब आम बात हो गई है। इन विषयों पर अब केवल प्रिंट मीडिया और मूवी वगैरा में भी(विज्ञापनों और फीचर फिल्म के माध्यम से भी)इन्हें बनाया और बताया जा रहा,है कहीं ना कहीं समाज के लिए यह लाभप्रद है। देश और समाज में बढ़ते यौन अपराध तथा इसके पीछे आपराधिक मनोवृत्ति को जानने में मनोविश्लेषण का एक बहुत बड़ा हाथ है। दमित,कुंठित काम इच्छा, मजबूरी या आदतन, एडल्ट फिल्मों (देखना या काम करना) कारण चाहे जो भी हो इसका पता मनोविश्लेषणबाद ने लगाने का प्रयास किया है। आनंद की प्राप्ति के शॉर्टकट के साधन तथा अतृप्त मन व्यक्ति की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगता है।

सामाजिक नीतियों : मनोविश्लेषणवाद के सिद्धांतों ने सामाजिक नीतियों को ध्यान में रखा है, और इसे प्रभावित भी किया है,- जैसे अपराध और न्याय प्रणाली में व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य को भी ध्यान में रखकर न्याय और नीतियों को बनाया है। इन पर कार्य भी किया है। व्यक्ति की उम्र, स्थिति, वातावरण, कार्य का प्रारूप आदि को ध्यान में रखकर ही नीतियों और योजनाओं को बनाया जाता है, और यही अपराधियों के संदर्भ में भी लागू होता है।

भाषा जगत : भाषा जगत में आई उथल-पुथल तथा मिश्रित भाषा भाषाओं के शब्द अनकही इच्छा जो भाषा के माध्यम से पन्नों पर लाते हैं। लेखको, कवियों ने इसे कहानी,उपन्यास, रेखा चित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी में आसानी से देखा जा सकता है। मनोविश्लेषणवाद की भाषा में महती भूमिका है,जिसे नकारा नहीं जा सकता अज्ञेय, जैनेंद्र, यशपाल आदि लेखकों की कृतियों में इसे आसानी से देखा जा सकता है।आधुनिक युग की रचनाएं भी आधुनिक,मुद्दों से प्रभावित है। यह मुद्दे हैं-जैसे दमित इच्छाएं कुंठा, तनाव, यंत्रवत जीवन, त्रासदी आकाल,अनकही भावनाएं,अपना संघर्ष, इच्छाओं से समझौता,आदि। इन्हीं मुद्दों पर आजकल अधिकतर रचनाएं आपको मिलेगी। आज का मनुष्य प्रगति के पथ पर बढ़ चला है। अब वह भाषा के लिखित तथा अलिखित माध्यमों से अपनी अधूरी इच्छाओं को पूरा करता है।

व्यक्तित्व विकास और मनोविश्लेषणवाद : मनोविश्लेषणवाद में व्यक्तित्व विकास और आत्म जागरूकता पर बल दिया है। अब कई ऐसे माध्यम उपलब्ध हैं,जिनके माध्यम से हम अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं। अपनी व्यक्तिगत कमजोरी और ताकत को पहचान सकते हैं। उन पर काम कर सकते हैं। इसमें स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण में सुधार करना शामिल है, जो व्यक्ति को व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों रूपों से विकसित करने में मदद करती हैं।

व्यक्तित्व विकास के कई आयाम है जैसे :

शारीरिक विकास -शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण पहलू है नियमित व्यायाम और पोषण युक्त आहार, मानसिक और शारीरिक क्रियाकलाप आदि इस विकास में मदद करते हैं।

मानसिक विकास-इसके अंतर्गत सीखना, समस्या समाधान और तार्किक और व्यावहारिक सोच को शामिल किया गया है। शिक्षा,पुस्तकों को पढ़ना,नई-नई चीजों से सीखना(पहेलियां और क्यूब्स)आदि, मानसिक विकास में मदद करता है।

भावात्मक विकास- भावात्मक विकास जिसमें अपनी व दूसरों की भावनाओं को समझना महत्व देना,स्वीकार करना,प्रतिबंधित करना, प्रभावित करना,प्रेरित करना आदि को इसमें शामिल किया गया है। भावात्मक बुद्धि, आत्म जागरूकता और भावात्मक अभिव्यक्ति,भावात्मक विकास में मदद करती है,जो मनोविश्लेषणवाद के माध्यम से हमारे समक्ष एक-एक कारणों सहित प्रस्तुत होती है।

सामाजिक विकास-सामाजिक विकास में सामाजिक संबंधों को प्राथमिकता दी गई है संबंध बनाना व इसे बनाए रखना निभाना आदि को इसके अंतर्गत शामिल किया गया है सामाजिक कौशल सामाजिक सहानुभूति संचार कौशल सामाजिक विकास में मदद करता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इसके सारे क्रियाकलाप समाज पर ही निर्भर करते हैं अत: इसका सामाजिक विकास अत्यंत ही आवश्यक है जो इसे अंत तक सरवाइव करने के लिए बहुत जरूरी है। आज मनोविज्ञान में कई ऐसे टेस्ट मौजूद है जिनकी सहायता से हमें सामाजिक विकास में आ रही कमियोंध्बाधाओं का पता लगा सकते हैं, तथा इन्हें हम आसानी से दूर भी कर सकते हैं।

आध्यात्मिक विकास - व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास जीवन में जीने का अर्थ और जीवन का उद्देश्य को समझने की क्षमता आदि को इसमें शामिल किया गया है। ध्यान, योग,आध्यात्मिक प्रार्थनाएं,विकास में मदद करती हैं। जो मानसिक शांति की ओर जीवन को अग्रसर करते हैं। यू कहे तो व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास व्यक्ति को व्यक्ति से अपनी पहचान करता है तथा जीवन में शांति तथा नैतिक परिपक्वता और नैतिक विकास की ओर हमें ले जाता है कहीं ना कहीं यह हमें ईश्वर की ओर ले जाता है मनुष्य के जीवन का मोक्ष ही तो अंतिम लक्ष्य है। मनुष्य का आध्यात्मिक विकास मनुष्य को मनुष्यता से खाती है जो उसे जानवर से मनुष्य और मनुष्य से एक संभ्रांत समाज की ओर अग्रसर करती है

इस प्रकार मानव व्यवहार का अध्ययन विश्लेषण मूल्यांकन व व्याख्या करने वाले विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का अर्थ निहित है मनोविज्ञान से निकलने वाले संप्रदायों में गेस्टाल्ट वादी व्यवहार वादी वातावरण वादी मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक वैज्ञानिक चिकित्सक सिगमंड फ्रायड का जन्म 1856 में आस्ट्रिया में हुआ इन्होंने सिद्ध कर दिया कि मनुष्य कार्य किसी न किसी कारक से प्रेरित होकर ही करता है और उसके कारण का पता लगाया जा सकता है। उन्होंने मानव मन को कारण मानते हुए इसकी तीन तरह बताई है।

चेतन मन अर्ध चेतन मन और अवचेतन मन डॉक्टर बच्चन सिंह के शब्दों में चेतन मन सामाजिक प्रतिबंधों का मन है जिसमें सभ्यता संस्कृति अचार्य विचार कहा जा सकता है (आलोचना और आलोचना पृष्ठ संख्या 69) चेतन मन में मनुष्य का क्रियाकलाप और गतिविधियां दिखाई देती हैं परंतु क्रियाकलापों पर प्रभाव अंत:करण में छिपा अवचेतन मन का होता है मन में छपी दमित वासनाएं कुंठाएं आप अपूर्ण बढलती इच्छाएं लगातार लावा का रूप लेकर देखते हैं जो कभी ना कभी मनुष्य की संवेदनाओं को विभिन्न कर्म से यथार्थ रूप में हमारे समक्ष लाकर खड़ी कर देती हैं।

'अपने नरक की बेतरतीबी मैं ही ढूंढेंगी वें। अपनी अपरिहायृर्ता की तसतली / खीस भारी प्रसन्नता के साथ' (जहां की महिलाएं हो गई कहीं, पृष्ठ संख्या 37) समाज में मनोविश्लेषणवाद के सिद्धांतों के रसायन में घोलकर जो क्रियाएं हुई वह साहित्य में यथार्थ के चित्रण के रूप में उभरकर सामने आई 20वीं शताब्दी में जहां मन का विश्लेषण जोरों पर था वही साहित्य के रजक के रूप में फ्रायड के सिद्धांतों का अवतरण को और कर अज्ञेय, मुक्तिबोध जैनेंद्र इलाचंद्र जोशी आदि साहित्यकारों ने साहित्य में निरूपित यथार्थ का चित्रण के द्वारा मां के क्रोध में छिपे हुए वह दमित कामवासनाएं प्रस्तावित होती दिखाई देती हैं जो फ्रायड के कामवृत्ति के सिद्धांत के अनुरूप विकसित मन की अभिव्यक्ति, यथार्थ का रूप लेती हुई आज की नग्नता को भी पीछे छोड़ चुकी है।

फ्रायड-मनोचिकित्सक थे और मनोरोगियों के उपचार की दृष्टि से ही उन्होंने सिद्धांतों की स्थापना की इन्हें सिद्धांतों का प्रभाव कला और साहित्य पर काफी पड़ा फ्राइड का मत था की कला और धर्म दोनों का उद्भव अवचेतन मन की संचित प्रेरणाओं और इच्छाओं से होता है समाज का व्यक्ति या कलाकार अपने काम शक्ति के उदयाति कारण के लिए ही सृजन करता है समझ में साहित्य चित्रकला मूर्तिकला काव्य कला भाषण कला जन सेवा धर्म आदि इसी काम वृत्ति के उदात्तातीकरण के विभिन्न रूप है वृहद ने साहित्य समाज सृजन की जो बात कही है वह काम वृत्ति के अनुरूप में होगी तो ही समाज कल्याणकारी होगा तथा साहित्य भी इसमें एक सकारात्मक भूमिका निभा सकेगा।

वही मनोविश्लेषणवादी विद्धान यंग के सिद्धांत 'हीन भावना' के कारण अंतर्मुखी होना अपनी क्षमता को ना पहचान पाना आदि है जैनेंद्र यशपाल आदि उपन्यासकार मनोवैज्ञानिकता के सांचे में ढले हुए पात्र व उपन्यास हमें यह दिखाते हैं।

समाज में मानव के व्यवहार और यहां तक प्रकृति और मानव के बीच संबंध को भी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के दायरे में लाकर खड़ा कर दिया है। सुसभ्य हैं हम सचमुच ? पांडवों से नहीं। बमों, मिसाईलों से रोंधते इस पृथ्वी को, बारूदी धुएं से उधेलते वायुमंडल खांसती, हांफती कांपती /मानवता कि ओर ताके। (ज्ञानेंद्रपति संषयात्मा पृष्ठ संख्या 103)

निष्कर्ष - आधुनिक समाज में मनोविश्लेषण के सिद्धांत मानव के चरित्र व मन के विचारों के पीछे के बीहड़ जंगल के अंधकार की अभिव्यक्ति है,जो यथार्थ के रूप में अनुभूतियां व वेदना के माध्यम से उधड़कर अपनी छिपी हुई अनैतिकता,विश्वास अति विश्वास, त्रास घुटन, कामवासना, अतृप्त इच्छाएं और संभ्रांत समाज के संस्कारों के पीछे घुटी हुई वह चेतना है, जो व्यक्त होकर अपनी अभिव्यक्ति से कुछ और संतोष तथा आत्मतुष्टि प्राप्त करने की कोशिश करती है।

'जिंदगी को भूल भुलैया मानकर / मैं दौड़ता और छटपटाता / अटकता / भटकता / जिसे खोज रहा हूं, वह द्वारा / मेरे मन का था।'
भारत भूषण अग्रवाल(उतना कहे सूरज)।(कविता समाप्ति)पृष्ठ संख्या 18

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. डॉ. सुनीता कुमारी- अज्ञेय के नारी पात्रों में मनोवैज्ञानिक चित्रण- पृष्ठ संख्या 2.
2. डॉक्टर बच्चन सिंह आलोचना और आलोचना - पृष्ठ संख्या 69
3. जहां की महिलाएं हो गई कहीं -पृष्ठ संख्या 37
4. ज्ञानेंद्रपति संषयात्मा-पृष्ठ संख्या 246
5. संपादक अशोक भाटिया श्रेष्ठ निबंध द पृष्ठ संख्या 389
6. डॉ. राजकुमार-हिंदी साहित्य मनोविश्लेषण सैद्धांतिक स्वरूप - कल्पना प्रकाशन, 2021 (भूमिका से) पृष्टसंख्या 1-2
7. डॉक्टर कामता प्रसाद पांडे-नवीन शिक्षा मनोविज्ञान विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी पृष्ठ संख्या 43, 270,316.
8. अरुण कुमार सिंह- समाज-मनोविज्ञान की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास इंटरनेशनल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 445, 615,
9. सोहन लाल तातेण और रत्नलाल जैन- जैन कर्म-विज्ञान और मनोविज्ञान, रीड वर्थी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 137.
10. फाय्ड-मनोविश्लेषण-राजपाल एंड संस पब्लिकेशन हाउस पृष्ठ संख्या 219,292.

****